The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतेंदु मंडल एवं मोतीमंडली एक परिचयात्मक अध्ययन

Dr. Laxmi Prasad Sharma

Asst. Professor Sikkim Govt. Sanskrit College, Samdong, Laxmi1715@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16871433

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

ABSTRACT

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह के उपाधि से विभूषित भारतेंदूबाबू हरिश्चंद्र एवं माध्यमिक कालीन नेपाली साहित्येतिहास के युवाकवि मोतीराम भट्ट अपने- अपने भाषा साहित्य के क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। दोनों रचनाकारों ने साहित्य को आम जनमानस तक पहुँचाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। इतना ही नहीं इन रचनाकारों ने साहित्य को विशेष समकालीन युवा एवं नवरचनाकारों के मध्य संप्रेषित करने और साहित्य को व्यष्टि से समष्टि की ओर प्रवाहित करने अथवा सामुहिक या संगठनिक विकास पर अभूतपूर्व योगदान दिया है। रचनाकारद्वय युवावस्था में ही यह सबकुछ कर पाये। अल्पायु में ही इसे सिद्ध करना था क्योंकि भारतेंदु हरिश्चंद्र की आयु महज पैंतीस वर्ष की और मोतीराम भट्ट की समग्र आयु मात्र तीस की रही। इसी आयु में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी साहित्य को सर्वस्पर्शी बनाने हेतु और भारतेंदुमंडल के माध्यम से और मोतीराम भट्ट ने नेपाली साहित्य में मोतीमंडली के नाम से साहित्यिक मंडली की स्थापना की जो दोनो साहित्यकारों की बहुत बड़ी उपलब्धी है और रचनाकारद्वय विशेष युवाओं के लिए अत्याधिक प्ररणीय हैं। इसे दर्शाते हुए भारतेंदुमंडल एवं मोतीमंडली का संक्षिप्त स्वरूप उक्त लेख में सप्रमाणिक दर्शाया गया है। संबंधित विषय में अनुसंधान कर रहे शोधार्थियों के लिए यह लेख सांदर्भित सिद्ध हो सकता है। उक्त लेख इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि रचनाकारद्वय समकालीन और एकदूसरे से अत्याधिक प्रभावित भी हैं। दोनों रचनाकारों ने हिंदी एवं नेपाली साहित्य को जोड़ने का कार्य किया था। अतः उनके समकालीन रहे रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय इस लेख में प्रामाणिक रूप में रखा गया है।

भारतेंदुमंडल के प्रमुख साहित्यिक हस्ताक्षर

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य के इतिहास में एक अविस्मरणीय हस्ताक्षर हैं, जिनकी बदौलत हिंदी साहित्य एक नए युग में प्रवेश कर सका। उनके प्रतिनिधित्व में इस युग को आधुनिक साहित्य की विविध विधाओं का परिचय प्राप्त हुआ। "स्वयं लेखन के अतिरिक्त, भारतेंदु ने अपने समय के अनेक लेखकों को गद्य लेखन के लिए प्रेरित किया। इससे लेखकों की ऐसी मंडली बनी जिसने भारतेंदु की इस परंपरा को आगे बढ़ाया। भारतेंदु की इस परंपरा को आगे बढ़ाने वाले लेखकों में थे - पंडित प्रतापनारायण मिश्र, पंडित बालकृष्ण भट्ट, पंडित बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', श्री जगन्नाथ दास 'रत्नाकर', श्री बालमुकुन्द गुप्त, श्रीनिवास दास आदि। इन सभी लेखकों ने गद्य,निबंध, नाटक, उपन्यास, एकांकी आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई।" भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य के ज्ञाता भारतेंदु परंपरागत साहित्य में सुधार के हिमायती थे। भारतेंदु युग की सबसे बड़ी उपलब्धि का उल्लेख करते हुए श्री भगवान तिवारी लिखते हैं- "इस युग की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि नेता, सुधारक तथा साहित्यकार का स्वर एक हो गया। नेता जनता को उनके अधिकारों से परिचित कराकर उसकी नस-नस में राष्ट्रप्रेम का संचार कर रहा था, समाज सुधारक छुआछूत आदि कुरीतियों का विरोध कर रहा था और साहित्यकार नेताओं तथा समाज सुधारकों की वाणी में अपनी वाणी मिलाकर गद्य की विभिन्न विधाओं में लिपिबद्ध कर रहा था। पहली बार तीनों समवेत स्वर में बोल रहे थे। यह इस युग की सबसे बड़ी उपलब्धि है।" "भारतेंदु हरिश्चंद्र का युग सुधारवादी युग था। उस युग में जो भी रचनाएँ हुईं, वे भारत में प्रचलित बुराइयों के सुधार के लिए हुईं। स्वामी दयानन्द का समय भी भारतेंदु के समान ही था। स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना करके समाज में फैली बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। भारतेंदु और उनके समकालीन साहित्यकारों ने कविता, नाटक आदि के माध्यम से यही कार्य किया।" उस समय के रचनाकार एक साथ कवि, ग़ज़लकार, गद्यकार, पत्रकार, और नाटककार थे। गद्य को साहित्य की मुख्यधारा से जोड़कर इन रचनाकारों ने खड़ीबोली का उद्धार किया। हिंदी साहित्य उद्भव और विकास' में हजारीप्रसाद द्विवेदी ने सन् 1850 से 1900 ई. तक के रचनाकारों का उल्लेख करते हुए लिखा है -"भारतेंदु को केंद्र करके उस काल के अनेक कृति साहित्यकारों का एक उज्जवल मंडल ही प्रस्तुत हो गया। सहज-चटुल शैली के पुरस्कर्ता पं. प्रतापनारायण मिश्र (1856-94 ई.), तीखी और झनझना देने वाली भाषा में खरी-खरी कहने वाले पं. बालकृष्ण भट्ट (1844-1914 ई.), अनुप्रासयुक्त शैली की कविजनोचित भाषा लिखने वाले ठाकुर जगमोहन सिंह (1857-99 ई.) और बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' (1855-1922 ई.), नाटकों और उपन्यासों के क्षेत्र में नए मार्ग का प्रदर्शन करने वाले लाला श्रीनिवासदास (1851-87 ई.), शास्त्रीय विचार परंपरा के धनी संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान और लेखक पंडित अंबिकादत्त व्यास (1858-1900 ई.), अपने अगाध पांडित्य की छाप में सहज ठेठ शैली के पुरस्कर्ता महामहोपाध्याय पं. सुधाकर द्विवेदी (1850-1911 ई.), संस्कृत के विद्वान और भक्त साहित्यिक पं. राधाचरण गोस्वामी (1808-1925 ई.), तथा सुप्रसिद्ध नाटककार और प्राचीन साहित्योद्धारक बाबू राधाकृष्णदास (1865-1925 ई.) आदि अनेक सुलेखक उनसे प्रेरणा ग्रहण करके हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि करने लगे।" इन रचनाकारों ने समाज में घटित हर मुद्दे को निर्भीकता से उठाया। दुनिया का हर विषय उनका अपना विषय था, तभी तो वे एक साथ कवि,निबंधकार, नाटककार, उपन्यासकार, समीक्षक तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के संपादक थे। सार्वभौमिक साहित्य को स्वीकार करते हुए भी भारतीयता की सुगंध उनकी रचनाओं में विद्यमान थी। तत्कालीन शासकों द्वारा किए गए अन्याय के खिलाफ़ जनता में अपनी बात पहूँचाने के साथ-साथ, संस्कृत, बंगला तथा अंग्रेजी के कई रचनाओं को हिंदी में अनुवाद कर हिंदी गद्य की श्रीवृद्धि की। "भारतेंदु युग में सबसे अधिक सफलतानिबंध लेखन में प्राप्त हुई। निबंध का संबंध पत्र-पत्रिकाओं से सीधे जुड़ा हुआ था। लेखकों के सामने अनंत विषय थे - राजनीति,

समाज सुधार, धर्म, अध्यात्म, आर्थिक दुर्दशा, अतीत का गौरव, महापुरुषों की जीवनियाँ आदि विषयों पर विचार प्रकट करते हुए भारतेंदु युग के लेखकों ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम सेनिबंध साहित्य को खूब समृद्ध किया।" इन प्रमुख रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

बालकृष्ण भट्ट

भारतेंदु से छः साल बड़े और अनुभवी बालकृष्ण भट्ट हिंदी के सफल निबंधकार, नाटककार, उपन्यासकार, पत्रकार रहे। इनका जन्मस्थान प्रयाग है। सन्.1844 ई. को जन्मे भट्ट 70 साल की आयु में परलोकी हुए। हिंदी गद्य साहित्य श्रीवद्धि में बालकृष्ण भट्ट का नाम अग्र पंक्ति लिया जाता है। डॉ. वृजेंद्र अग्निहोत्री ने हिंदी प्रदीप के संपादक पं. बालकृष्ण भट्ट को भारतेंदुमंडल के सबसे वरिष्ठ सदस्य और भारतेंदु और द्विवेदी युग को जोड़ने वाले रचनाकार बताया है। संस्कृत का अध्ययन करने वाले भट्ट संस्कृत के अतिरिक्त अंग्रेजी, उर्दू-फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञान रखते थे। निबंधकार व पत्रकार के रूप में बालकृष्ण भट्ट का ऐतिहासिक महत्व है। विद्वानों का मानना है कि भारतेंदु युग में भट्टजी को सर्वाधिक ख्याति ललित निबंधकार के रूप में मिली। डॉ. कुमुद शर्मा ने अपनी रचना हिंदी के निर्माता में कहा- अपने प्रौढ चिन्तन, गम्भीर मनन, अद्‌भुत वाक्चातुर्य व्यंग्यात्मक तेवर और प्रखर अभिव्यंजना के बल पर भट्ट ने उत्कृष्ट निबन्धों की सर्जना की। बालकृष्ण भट्ट को कुछ विद्वान हिंदी निबंध का उद्भावक मानते हैं तो कुछ निबंध के जन्म दाता मानते हैं। साहित्य को जनसमूह के हृदय का विकास मानने वाले भट्ट जी अपने समय के प्रगतिशील और यथार्थवादी लेखक होने के साथ-साथ अनेक साहित्य एवं वैज्ञानिक विषयों का गम्भीर विवेचक भी थे। "उन्होंने संवत् 1933 में अपना हिंदी प्रदीप गद्य साहित्य का ढर्रा निकालने के लिए ही निकाला था। सामाजिक, साहित्यिक, राजनीतिक, नैतिक सब प्रकार के छोटे-छोटे गद्य प्रबंध ये अपने पत्रों में तीस वर्ष तक निकालते रहे।"

कुमुद शर्मा लिखते हैं- निबंध व पत्रकार के रूप में बालकृष्ण भट्ट का ऐतिहासिक महत्त्व है। भारतेंदु से प्रेरणा पाकर उन्होंने इलाहाबाद में हिंदी प्रवर्द्धिनी सभा की ओर से हिंदी प्रदीप नामक मासिक पत्र निकालना शुरु किया। ब्रिटिश सरकार के आक्रमक रुख, घोर आर्थिक संकटों और तमाम अन्य विरोधों के बावजूद उन्होंने अथक परिश्रम, लगन और मेहनत से तैतीस वर्षों तक हिंदी प्रदीप का कुशल सम्पादन किया।" सर्वाधिक निबंध लेखक के रूप में परिचित बालकृष्ण भट्ट के निबन्धों की संख्या लगभग एक सहस्राधिक माना जाता हैं। बालकृष्ण भट्ट का पहला निबंध संग्रह- साहित्य सरोज सन् 1920 ई. में पं. लक्ष्मीकान्त भट्ट के संपादकत्व में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। निबंध संकलन- भट्ट निबन्धावली, भट्टनिबंधमाला और साहित्य सुमन। विचारात्मक निबंध- कालचक्र का चक्कर, वेद क्या है?, आत्मनिर्भरता, नई सभ्यता की बानगी, भिक्षावृत्ति, आत्मगौरव, बालविवाह, राजा और प्रजा, स्त्रियाँ और उनकी शिक्षा, प्रतिभा, साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है, माधुर्य, शब्द की आकर्षण शक्ति तथा रसाभास आदि। वर्णनात्मक- प्रेम के बाग का सैलानी। कथात्मक- एक अनोखा स्वप्न। भावात्मकनिबंध- कल्पना, आँसू, चन्द्रोदय। व्यंग्यपरक- इंगलिश पढ़े सो बाबू होय, अकील अजीरन रोग, एक इंगलिसाइज्ड नये मित्र से मुलाकात, दंभाख्यान, भकुआ कौन-कौन, चमत्कारिक नहीं तथा पुरुष अहेरी की स्त्रीयाँ अहेर आदि। आत्मव्यंजक- चली सो चली, देवताओं से हमारी बातचीत, खटका तथा ईश्वर भी क्या ठठोल है आदि। जीवन चरित्र- शंकराचार्य, गुरुनानकदेव नाटक- पद्मावती, चंद्रसेन, किरातर्जुनीय, पृथुचरित या वेणी संहार, शिशुपाल वध, नलदमयन्ती या दमयन्ती स्वयंवर, शिक्षादान,

आचार विडम्बन, नयी रोशनी का विष, वृहन्नला, सीता वनवास, पतित पंचम। उपन्यास- नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान पत्रिका-हिंदी प्रदीप आदि इनके प्रमुख रचनाओं में गिने जाते हैं।

प्रताप नारायण मिश्र:

हिंदी के हास्य विनोद तथा प्रखर व्यंग्यकार पण्डित प्रतापनारायण मिश्र का जन्म सन् 1856 ई. में उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में हुआ। महज 38 साल की आयु में हिंदी साहित्य को 32 ग्रंथों से समृद्ध करने के साथ-साथ 'ब्राह्मण' जैसे सशक्त एवं क्रांतिकारी पत्रिका का प्रणयन भी किया। भारतेंदु हरिश्चंद्र को आदर्श मानकर उनके शिष्यत्व में चलने वाले प्रखर रचनाकार प्रताप नारायण मिश्र भारतेंदुमंडल के विशिष्ट रचनाकार माने जाते हैं। मिश्रजी एक साथ कवि,निबंधकार, नाटककार, पत्रकार, अनुवादक भी थे। एक निबंधकार के रूप में मिश्रजी का व्यक्तित्व सर्वाधिक उत्कृष्ट रहा। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने हिंदी साहित्य का इतिहास में एक प्रसंग का उल्लेख किया है- "भारतेंदु, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी उद्योग करके अभिनय का प्रबंध किया करते थे और कभी कभी स्वयं भी पार्ट लेते थे। पं. शितला प्रसाद त्रिपाठीकृत जानकीमंगल नाटक का जो धूम धाम से अभिनय हुआ था उसमें भारतेंदु ने पार्ट लिया था। इसका विवरण 8 मई 1868 के इंडियन मेल में प्रकाशित हुआ था। प्रतापनारायण मिश्र का अपने पिता से अभिनय के लिये मूछ मुड़ाने की आज्ञा माँगना प्रसिद्ध है।" तभी तो आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने प्रतापनारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट को अंग्रेजी गद्य-साहित्य में एडीसन के साथ तुलना करते हुए इन्हें हिंदी गद्य साहित्य का स्टील कहा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र की विरासत को आगे बढाने का काम प्रतापनारायण मिश्र ने किया। भारतेंदु के मृत्यु के बाद भट्ट जी ने हिंदी प्रदीप की एक सम्पादकीय में एक टिप्पणी लिखी थी "अब चंद्र (भारतेंदु हरिश्चंद्र) के अस्त होने पर उनके उद्भट लेख की बची बचायी कणिका यदि कहीं बची रही है तो कानपुर निवासी ब्राह्मण सम्पादक के लेख में देखी जाती है।" प्रतापनारायण मिश्र निर्भिक व्यंग्य लेखक के रूप में भी प्रसिद्ध हैं। वे अपनी लेखन में बोलचाल की सरल भाषा एवं स्वच्छन्दपूर्ण, हास्यव्यंग्यपरक होने के साथ-साथ गम्भीर एवं साधु भाषा का प्रयोग भी करते थे। कहा जाता है वे लेखनकला में भारतेंदु को ही आदर्श मानते थे। इन्होंने अपने जीवन में 90 से अधिक निबन्धों के द्वारा हिंदी गद्य को समृद्ध किया है। प्रमुख रचनाएँ : काव्य- कानपुर माहात्म्य, तृप्यन्ताम, तारापति पचीसी, दीवाने बरहमन (वेदांत शतक), दंगल-खण्ड, प्रार्थना शतक, प्रेमपुष्पावली, फाल्गुन महात्म्य, मनकी लहर, युवराज कुमार स्वागतन्ते, लोकोक्ति शतक (100 लोकोक्तियों पर राष्ट्रीय भावपरक रचनाएँ), शोकाश्रु, ब्रैडला का स्वागत (देश की गरीबी का चित्रण), श्रृंगार विलास, श्री प्रेमपुराण, होली है, स्फूट कविताएँ। नाटक, प्रहसन तथा भाण- गोसंकट, हठी हमीर, कलिकौतुक, जुवारी खुवारी (अपूर्ण प्रहसन), संगीत शाकुन्तल, भारत दुर्दशा, कलि प्रवेश (गीति रूपक), दूध का दूध पानी का पानी (अपूर्ण)। निबंध- प्रश्नोत्तर, प्रस्तावना, हिम्मत राखो एक दिन, ईश्वर का वचन, मुनीनां चः मति भ्रमः, समझ की बविहारी, नास्तिक, बलि पर विश्वास, पौराणिक गुढ़ार्थ, अब बातों का काम नहीं है, सोश्यिल कान्फ्रेस, पुलिस की निंदा क्यों की जाती है, सर्व संग्रह कर्त्तव्यं कः काले फलदायकः, पुराण समझने के लिए समझ चाहिए, झगड़ालूपंथ, रसिक समाज, नवपंथी और सनातनचारी, शिवालय तथा विश्वास, असेसर, स्यापा, बेगार, रिश्वत, धोखा, वृद्ध, खुशामद, बात, दाँत, पेट, मूँछ, आँसू, भौंह, समझदार की मौत, होली या होरी है, दयापात्र जीव, देशोन्नति, शालिग्रामजी का कचहरि में जाना ठीक है या नहीं, जरा अब तो आँखें खोलिए, नभूतो न भविष्यति, जरा सुनो तो सही, हिम्मत राखो एक दिन नागरी का प्रचार ही होगा, धूरे से लत्ता बनै कनातन का डौल बाँधे, श्री हरिश्चंद्र

चन्द्रिका, बस, बस होश में आइये, भारत दुर्दशा की दुर्दशा, उर्दू बीबी की पूँजी, सहवास बिल अवश्य पास होगा, रसिक समाज, आप बीती कहूँ कि जग बीती, देशदशा, भारतेंदु , शोकप्रकाश, रक्ताश्रु, मस्ती ममता, धोखा, द, ट, दयापात्र, आप, त, भौ, पक्ष, जरा अब ते आँखें खोलिए, नागरी का प्रचार हो ही गया, भारत पर भगवान की अधिक ममता है, देवमन्दिरों के प्रति हमारा कर्तव्य, प्रह्लाद चरित्र, रथयात्रा, दशावतार, भेड़ियाधसान, अपभ्रंश तथा सलाह आदि। हास्य व्यंग्यपरक- 'घूरे के लत्ता बिनै कनातन का डौल बाँधे', 'अष्ट कपारी दादरिद्री जहाँ जाय तहँ सिद्धि', 'फूटी सहैं आजी न सहैं', 'मरै का मारै साहमदार', 'उर्दू बीबी की पूँजी', 'रुस और मूस', 'हम राजभक्त हैं' तथा 'तिल', 'मार मार कहै जाओ नामर्द तो खुदा ही ने बनाया है' तथा 'नारी' आदि। समालोचना- भाषादीपिका की समालोचना, तप्तासंवरण नाटक की समालोचना, संयोगिता स्वयंवर की आलोचना, भाग्यवती की समालोचना, तन, मन, धन गुसाई जी को अर्पण, भारत सौभाग्य, हास्य तरंग की समालोचना, बेनिस का बाँका की समालोचना आदि। बंग्ला भाषा से अनूदित-उपन्यास- 'अमर सिंह', 'इन्दिरा', 'कपाल कुण्डला', 'देवी चौधरानी', 'युगालांगुलीय', 'राज सिंह', 'राधारानी'। अनूदित कहानी- 'कथा बाल संगीत', 'कथा माला', 'परिचिताष्टक'। मौलिक रचनाएँ- 'शैवसर्वस्व', 'सुचाल शिक्षा', 'स्वास्थ्य विद्या', 'शिशु शिक्षा'। संग्रह- 'मानसविनोद'-(पद्य), 'रसखानशतक'-(पद्य), 'रहिमन शतक'-(पद्य), 'सतीचरित'-(गद्य) नाटक- 'गो संकट', 'कलिकौतुक', 'कलिप्रभाव', 'हमीरहठ', 'जुआरी' (प्रहसन) 'संगीत शाकुन्तल'। निबंधसंग्रह- 'निबंध नवनित', 'प्रताप पीयूष', 'प्रताप समीक्षा'। अनूदित गद्य कृतियाँ-'राजसिंहासन', 'अमरसिंह', 'इन्दिरा', 'कथामाला', 'शिशु विज्ञान', 'राधारानी', 'चरिताष्टक', 'पंचामृत', 'नीतिरत्नमाला' आदि। पत्रिका- 'ब्राह्मण'।

बदरी नारायण चौधरी प्रेमघन

भारतेंदु हरिश्चंद्र के घनिष्ठ मित्र बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' का जन्म सन् 1855 ई. में उत्तर प्रदेश में हुआ था। भारतेंदु हरिश्चंद्र से मात्र पाँच साल छोटे थे। इन्होंने हिंदी की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। बहुभाषाविद प्रेमघन ने ब्रजभाषा की कई पत्र-पत्रिकाएँ निकाली। ब्रज भाषा को ही इन्होंने प्राथमिकता प्रदान की। साहित्य सृजन के साथ-साथ साहित्य वातावरण विकसित करने के उद्देश्य से उन्होंने मीरजापुर में 'सद्धर्म' नामक संस्था की स्थापना की तथा 'रसिक समाज' का गठन किया। ऐतिहासिक दृष्टि से विचार करने पर वे भारतेंदु के समकालीन कवियों में सबसे अधिक समसामयिक हैं। प्रेमघन भारतेंदु के परम प्रशंसकों में से थे। उन्हें एक प्रकार से भारतेंदु का अनुकर्ता भी कहा जाता है। उनकी रचना संसार कीबात की जाय तो भारतेंदु के अपवर्ग और पुरुषोत्तमपंचक की तरह बृजचंद पंकज लिखा, बकरी विलाप की तरह पितरप्रताप लिखा। उनके श्रृंगारिक-सवैयों की तरह कवित्त-सवैये लिखे जो 'प्रेमघनपियूष वर्षा' में संकलित है। "इन्होंने भारतेंदु की भाँति देशभक्ति और राजभक्ति संबन्धित कविताएँ भी लिखीं। दादा भाई नौरोजी के पार्लियामेंट के सदस्य होने पर उन्होंने मंगलाशा अथवा हार्दिक धन्यवाद लिखा जिसमें देशभक्ति और राज भक्ति का सन्निवेश हुआ है।" उनकी सामयिक रचनाएँ परिणाम में भी अपेक्षाकृत अधिक हैं। दो खण्डकाव्य जीर्ण जनपद और अलौकिक लीला उनकी ऐतिहासि देन है। जो भविष्य के रोमानी और इतिवृत्तात्मक खण्ड काव्यों की दीशा निर्देश करती है। 'जीर्ण जनपद' का दूसरा नाम है 'दुर्दशा दत्तापुर' यह प्रेमघन की जन्मभूमि है। इस काव्य में दत्तापुर ग्राम के संबंध में कवि के स्मृति-चित्र वर्णित है। प्रेमघन गाँव को, उसके समाज को, उसके त्योहार आदि को जिस रूप में अनुभूत किया था उसका यथार्थ चित्र उभारा है।" भाषगत दृष्टिकोण से देखा जाय तो प्रेमघन अरबी-फारसी या अँग्रेजी के प्रयोग के पक्ष में नहीं थे। वे तत्सम, तद्भव शब्दों में भाषिक सौन्दर्य देखते थे। आचार्य रामचंद्र

शुक्ल बद्री नारायण चौधरी और बालकृष्ण भट्ट को हिंदी में समालोचना का सूत्रपात करने वाले मानते है। कुमुद शर्मा ने अपनी रचना हिंदी के निर्माता में बद्रिनारायण चौधरी प्रेमघनजी को बालकृष्ण भट्ट के समान खड़ी बोली गद्य की आलोचना का सूत्रपात करने वाले रचनाकार माना है। प्रेमघन जी की समस्त रचनाएँ प्रेमघन सर्वस्व में संकलित है। जीर्ण जनपद (दुरदर्शा दत्तापुर), अलौकिक लीला आदि प्रसिद्ध कृतियाँ इसके प्रथम संकलित है।" काव्य- 'युगल मंगल स्तोत्र', 'वृजचंद पंचक', 'कलिकाल तर्पण', 'पितर प्रताप', 'शोकाश्रु बिन्दु', 'होली की नकल', 'मन की मौज', 'प्रेम पीयूष वर्षा', 'सूर्यस्तोत्र', 'मंगलाशा', 'हस्य बिंदु', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'आनंद बधाई', 'साहित्य लहरी', 'भारत बधाई', 'स्वागत पत्र', 'आनंद अरुणोदय', 'आर्या अभिनन्दन', 'सौभाग्य समागम', 'मयंक महिमा', 'श्रृंगार बिंदु', 'उर्दू बिंदु', 'स्फुट बिंदु', 'विदेश बिंदु' आदि। गद्य रचनाएँ- 'वीरंगना रहस्य', 'वैश्या विनोद', 'भारत सौभाग्य', 'वृद्ध विलाप', 'प्रयाग रामागमन नाटक', 'बनारस का बुढ़वा मंगल', 'समय', 'दिल्ली दरबार में', 'मित्र मंडली के पार', 'नवीन वर्षारम्भ', 'परिपूर्ण पावस', 'मनोभाव आनंद' आदि। 'जीर्ण जनपद' (दुरदर्शा दत्तापुर), 'आनंद अरुणोदय', 'हार्दिक हर्षादर्श', 'मयंक महिमा', 'अलौकिक लीला', 'वर्षा विन्दु', 'लालित्य लहरी', 'ब्रजचंद पंचक', 'सूर्य स्तोत्र' आदि। कालान्तर में इन सभी का काव्यकृतियों का संकलन प्रेमघन सर्वस्व नाम से प्रकाशित हुआ। आलेख- 'भारतीय नागरी' 'भाषा'। नाटक- 'भारत सौभाग्य', 'प्रयाग रामागमन', 'वीरंगना रहस्य महानाटक', 'वेश्याविनोद महानाटक'। खण्डकाव्य- 'जीर्ण जनपद' और 'अलौकिक लीला'। समीक्षा- 'दृश्य', रूपक वा नाटक खण्ड-1-5, 'नीलदेवी' -खण्ड-1-6, 'बालविध्वासंताप नाटक', 'संयोगितास्वयंबर' नाटक आदि। पत्रिका- 'नागरी नीरद', 'आनंद कादम्बिनी'।

राधाचरण गोस्वामी

संस्कृत के प्रकांड विद्वान गोस्वामी जी का जन्म वृन्दावन में हुआ था। भारतेंदु हरिश्चंद्र को आदर्श मानकर चलकर समसामयिक विषयों पर कलम चलाने वाले ब्रजभाषा के समर्थक कवि,निबंधकार, नाटककार, पत्रकार, समाजसुधारक, देशप्रेमी राधाचरण गोस्वामी वृन्दावन से 'भारतेंदु ' नामक मासिक पत्रिका निकालते थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास में इन्हें संस्कृत साहित्य और अंग्रेजी के अच्छे जानकार तथा हिंदी के एक प्रेमपथिक कवि और माधुर्य गद्य लेखक मानते हैं। "राधाचरण गोस्वामी ने वृन्दावन से 'भारतेंदु ' नामक मासिक पत्र का सम्पादन प्रकाशन किया था। इसका प्रथम अंक 22 अप्रैल 1883 ई. को निकला और 3 वर्ष 5 माह तक चला। इसके पश्चात इन्होंने वृन्दावन में ही श्री कृष्ण चैतन्य चन्द्रिका नामक धार्मिक मासिक पत्रिका का सम्पादन प्रकाशन किया।" अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गोस्वामी परम वैष्णव और ब्रजभाषा के समर्थक थे। इसका धार्मिक कारण था उनका मानना था कि "मैं जिस कुल में उत्पन्न हुआ उसमें अंग्रेजी पढ़ना तो दूर है, यदि कोई फारसी अंग्रेजी का शब्द भूल से भी मुख से निकल जाये तो बहुत पश्चाताप करना पड़े।" राधाकृष्ण दास ने भी लिखा है कि 'श्री वल्लभाचार्य जी के सम्प्रदाय में अब तक यह प्रथा है कि भगवत्सेवा के समय ब्रजभाषा का बोला जाना ही उचित समझा जाता है, यवनी शब्दों का प्रयोग निषेध है।' इस आधार पर कहा जा सकता है कि राधाचरण गोस्वामी सरीखे विद्वान खड़ी बोली पद्य का विरोध धार्मिक आग्रह की वजह से ही कर रहे थे।" राधाचरण गोस्वामी का कृतित्व नामक अपनी लेख में सदानन्द प्रसाद गुप्त इन्हें 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अकेले दम पर वृन्दावन को पुनर्जागरण का केंद्र बनाने वाले रचनाकार बताया है। कहा जाता है कि राधाचरण गोस्वामी हरिश्चंद्र मैग्जीन को देखकर इतने प्रभावित हुए कि साहित्य सेवा के लिए भारतेंदु -पत्रिका का सम्पादन प्रकाशन सन् 1883 से वृन्दावन से शुरु किया। इन्होंने कविकुल कौमुदी सभा स्थापित

की। इनके लेखों की संख्या 200 और इन्होंने 6,300 ले लगभग पत्र लिखे थे। जो मासिक, साप्ताहिक आदि पत्र आते थे। उनकी फायल बनाकर रख लेते थे। मंजु नाम से यह कवित्त लिखते थे। सन् 1882 के शिक्षा कमीशन को इन्होंने हिंदी संबंधी मेमोरियल भेजे जिनमें इन्होंने 21,000 के लगभग हस्ताक्षर कराये। प्रयाग में हिंदी -पत्र संपादकों की सभा स्थापित की गयी उसके ये एक वर्ष तक मन्त्री रहे, तीन वर्ष तक म्युनिसिपैल कमिश्नर रहे, 5-6 वर्ष तक मथुरा की डिवीजनल कांग्रेस कमेटी में सेक्रेटरी रहे। जिस मंदिर में रहते थे, उसे इन्होंने अपना पुस्तकालय भी बनाया था जिसमें 5000 के लगभग पुस्तकें थी।" प्रमुख रचनाएँ – प्रहासन- तन मन गोसाईं जी को अर्पण, बुढे मुहँ मुहसे लोग देखते तमाशे। नाटक- सती चन्द्रावली, अमरसिंह राठौड़, सुदामा। काव्य- नवभक्तमाल, दामिनी दुतिका, शिर सुषमा, विधवा-विलाप, भारत संगीत उपन्यास- बिरजा, जावित्री, मृण्मयीनिबंध- यमलोक की यात्रा आत्मकथा- आत्मचरित सम्पादन- 'भारतेंदुपत्रिका', 'श्री कृष्ण चैतन्य चन्द्रिका'।

राधाकृष्ण दास:

राधाकृष्णदास (1865-1907 ई.) राधाकृष्ण दास भारतेंदु के फुफेरे भाई थे। बहुमुखी प्रतिभा के धनी राधाकृष्ण दास ने कवि, नाटककार, उपन्यासकार, जीवनी लेखक,निबंधकार के रूप में हिंदी की सेवा की। "भारतेंदु के बाद उनके परिवार में साहित्य-सृजन का वातावरण नहीं रह गया था। किन्तु उनकी भाँति साहित्य को समर्पित भी नहीं थे। गोकुलचंद्र राधाकृष्ण को व्यवसाय में लगाना चाहते थे। राधाकृष्णदास कभी-कभी परिस्थितियों से ऊपर उठकर साहित्य भी रचा करते थे।" इन्होंने तत्कालीन अदालतों में नागरी लिपि के प्रचार के लिए प्रयत्न किया, काशी नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना के प्रमुख सहयोगी तथा अध्यक्ष भी रहे, काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा हिंदी पुस्तकों की खोज का कार्य आरंभ करने जैसे महत्त्वपूर्ण योगदान किया। प्रमुख रचनाएँ- 'दुःखिनी बाला' राधाकृष्ण दास की पहली रचना थी। राधाकृष्ण दास कृत 'निस्सहाय हिंदू' (1890) जिसे हिंदी का पहला राजनीतिक उपन्यास माना जाता है। जिसमें गोवध निवारण पर बल दिया गया है। भारतेंदुविरचित अपूर्ण हिंदी नाटक सती प्रताप को इन्होंने इस योग्यता से पूर्ण किया कि पाठकों को दोनों की शैलीयों में अंतर ही नहीं प्रतीत होता।" नाटक- 'दुःखिनी बाला'(1880), 'महारानी पद्मावती' (1882), 'धर्मालाप' (1885), 'महाराणा प्रताप' (1897), 'मेवीड़ विजय' आदि। उपन्यास- 'निस्सहाय हिंदू' जीवनी- 'भारतेंदु की जीवनी', 'गोपालचंद्र गिरधर दास', 'आर्यचरितामृत' (बाप्पा रावल की जीवनी) 'नागरीदास का जीवन चरित', अनुवाद- 'स्वर्णजता' (बंगला से हिंदी में अनुवाद) पत्रिका संपादन- 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' इतिहास- 'राजस्थान केसरी' 'राधाकृष्ण दास की समस्त रचनाएँ', 'राधाकृष्ण ग्रंथावली' के रूप में प्रकाशित है।

ठाकुर जगमोहन सिंह:

ठाकुर जगमोहन सिंह विजयराघवगढ (मध्यप्रदेश) के राजकुमार थे। इन्हें भारतेंदु युग के प्रथम रोमानी उपन्यासकार भी माना जाता है। कहा जाता है कि कुछ समय उन्होंने काशी में रहकर अध्ययन किया और बाद में भारतेंदुमंडल के सदस्य और भारतेंदु के परम मित्र भी बने। ये संस्कृत साहित्य और अंग्रेजी के अच्छे जानकार तथा हिंदी के एक प्रेम पथिक कवि और माधुर्यपूर्ण गद्य लेखक थे।" आ.रामचंद्र शुक्ल ने इन्हें भारतेंदु युग के प्रमुख प्रकृतिचित्रणकारों में स्थान दिया है। ठाकुर जगमोहन सिंह की प्रमुख रचनाएँ। काव्य संग्रह- 'प्रेम संपत्ति लता', 'श्यामालाल', 'श्यामासरोजनी', 'देवयानी' आदि उपन्यास-

'श्यामा स्वप्न'। इनकी समग्र रचनाओं का संकलन रमेश अनुपम ने 'ठाकुर जगमोहन सिंह सर्वस्व' के नाम से सम्पादित किया गया है।

अम्बिका दत्त व्यास:

सन् 1858 ई.-1957 ई. पंडित अम्बिका दत्त व्यास संस्कृत के प्रतिभाशाली विद्वान, हिंदी के अच्छे कवि और सनातन धर्म के बड़े उत्साही उपदेशक रहे। "उन्होंने अपने कवि जीवन का आरंभ कवितावर्द्धिनी सभा में पूरी अमी की कटोरिया-सी, चिरंजीवी रहौ विक्टोरिया रानी- समस्या की पूर्ति करके किया था। इस पर इन्हें सुकवि की उपाधि प्राप्त हुई थी।" "अम्बिका दत्त व्यास ने शास्त्रीय विषयों को व्यक्त करने में, संवादपत्रों में राजनीतिक बातों को सफाई के साथ सामने रखने में हिंदी को लगाया।" प्रमुख रचनाएँ- भारतेंदु के कहने से इन्होंने गोसंकट नाटक लिखा जिसमें हिंदूओं के बीच असंतोष फैलने पर अकबर द्वारा गोवध बंध किए किए जाने की कथावस्तु रखी गई है। कृष्णलीला को लेकर इन्होंने ब्रजभाषा में एक 'ललिता नाटिका' लिखी थी। 'अवतार मीमांसा' उनका प्रसिद्ध धार्मिक ग्रंथ है। समस्यापूर्ति संग्रह- समस्यापूर्ति सर्वस्व काव्य कृतियाँ- पावस पचासा, सुकवि सतसई, हो हो होरी, विहारी-विहार आदि। प्रबंधकाव्य- कंसवध (अपूर्ण) नाटक- भारत सौभाग्य, गोसंकट काव्य संग्रह- प्रेम माधुरी, प्रेम फूलवारी, प्रेममालिका कहानी संग्रह- कथा कुसुम कलिका पत्रिका- काशी वैष्णव पत्रिका, पियूष- प्रवाह।

रामकृष्ण वर्मा (बलवीर)

काशी जाति के खत्री परिवार में जन्मे रामकृष्ण वर्मा भारतेंदु मण्डली के प्रमुख सदस्य थे। रामकृष्ण वर्मा भारतेंदुयुगीन कवि तथा भारत जीवन प्रेस के स्वामी थे। उन्होंने अपनी प्रेस के माध्यम से अनेक पुरानी पुस्तकों को छपवाकर हिंदी का बहुत बड़ा उपकार किया था। "सन् 1851 ई.-1906 ई. वाराणसी में जन्म और देहांत। भारत जीवन प्रेस (वाराणसी) की स्थापना सन् 1884 ई. करके लगभग 200 पुस्तकों का प्रकाशन। ये भारत जीवन पत्र के सम्पादक, प्रकाशक रहे। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापकों में से एक थे।" रामकृष्ण वर्मा भारतेंदु के अच्छे मित्र थे। इनकी भाषा संबन्धी नीति भारतेंदु से मिलती जुलती थी। उस दौर में उर्दू के खिलाफ हिंदी की रचनाओं को छापने का एक बड़ा मंच था भारत जीवन। भारत जीवन- प्राचीनतम पत्र-पत्रिकाओं में बाबू रामकृष्ण वर्मा द्वारा बनारस से हिंदी में प्रकाशित होने वाली पत्रिका भारत जीवन का नेपाली संस्करण- गोर्खा भारत जीवन के नाम से स्वतंत्र किंवा उसी में संलग्न पत्रिका को अप्राप्य होने पर भी प्रथम नेपाली पत्रिका मान लिया जाता है। भानुभक्त आचार्य के जीवनीकार मोतीराम भट्ट ने भानुभक्तीय बालकाण्ड को भारत जीवन प्रेस बनारस से प्रकाशित किया।" आचार्य रामचंद्र शुक्ल अपनी हिंदी साहित्य का इतिहास में लिखते हैं- पं. अंबिकादत्त व्यास और बाबू रामकृष्ण वर्मा (बलवीर) के उत्साह से ही काशी कविसमाज चलता रहा। बलवीर अथवा वीर कवि उपनाम से ब्रजभाषा में बड़ी सरस रचना करते थे। इनके बलवीर-पचासा नामक काव्यग्रंथ का भी उल्लेख किया जाता है। प्रमुख रचनाएँ - अनूदित उपन्यास- संसार दर्पण (1885), ढंग वृत्तांतमाला, (1889), पुलिस वृत्तान्तमाला (1890), अकबर (1891), अमलावृत्तान्तमाला(1894), चित्तौरचातकी (बंगभाषा से अनुवाद-1895) अनूदित नाटक- वीरनारी, कृष्णकुमारी, और पद्मावती

काव्य- ताश कैतुक पच्चीसी, बलवीर पचासा, विरहा नायिका भेद, सूर्यपुराधीश आदि अन्य रचनाएँ-रसलीन, पद्माकर,पजनेश, कृपाराम, मनियार सिंह, लछिराम, बोधा आदि। पत्रिका- भारत जीवन।

लाला श्रीनिवास दास

सन् 1851-1887 ई. में भारतेंदु हरिश्चंद्र के समसामयिक रचनाकारों में श्रीनिवास दास विशेष नाटककार एवं उपन्यासकार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इन्होंने उस दौर में कई नाटकों की रचना की है। अंग्रेजी और उर्दू-फारसी शैलीकार श्रीनिवास को नाटक लेखन में भारतेंदु के समकक्षी माना जाता है।प्रमुख रचनाएँ- रणधीर प्रेममोहिनी हिंदी का प्रथम दुःखान्त नाटक माना जाता है। नाटक- प्रह्लादचरित, तप्तासंवरण, रणधीर प्रेममोहिनी, संयोगिता स्वयंवर उपन्यास- 'परीक्षागुरु'। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतेंदु हरिश्चंद्र का समय भारतीय समाज और साहित्य में व्यापक परिवर्तन का दौर था। भारतेंदु ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को जगाने का कार्य किया। स्वतंत्रता पूर्व भारत की सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, और धार्मिक परिस्थितियों ने भारतेंदु युग के साहित्य और रचनाकारों पर गहरा प्रभाव डाला। भारतेंदुयुगीन साहित्यकारों ने सामाजिक चेतना, देशभक्ति, भक्तिभावना, श्रृंगारिकता, और हास्य-व्यंग्य को अपनी रचनाओं में समाहित किया। उन्होंने राष्ट्रीय प्रेम और समाज सुधार को प्रेरित करते हुए रचनाओं में देशभक्ति और सामाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित किया। इस युग में खड़ी बोली गद्य का उदय हुआ, जिसने हिंदी साहित्य को एक नया स्वरूप और दिशा दी। भारतेंदुमंडल के साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को न केवल प्रचलित किया, बल्कि उसकी शब्द-संपदा को भी समृद्ध किया। इस प्रकार, भारतेंदु हरिश्चंद्र का समय और उनका मंडल हिंदी साहित्य के आधुनिक युग की नींव रखने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ

मोतीमंडली और समकालीन साहित्यकारों का परिचय

नेपाली साहित्येतिहास के माध्यमिककाल को इतिहासकारों ने मोतीराम युग के नाम से संबोधित किया है। इस युग के प्रतिनिधि रचनाकार होने का गौरव प्राप्त करनेवाले मोतीराम एक शीर्ष रचनाकार के साथ-साथ पथ प्रदर्शक भी रहे हैं। न केवल श्रृंगार अपितु श्रृंगार के साथ- साथ भक्ति, लोकभावना पर आधारित, ग़ज़ल, समस्यापूर्ति, जीवनी, समालोचना से लेकर कई नवीन रचनाओं से नेपाली साहित्य को समृद्ध किया है। मोतीराम भट्ट समकालीन ज्येष्ठ-कनिष्ठ सभी रचनाकार मोतीराम भट्ट के कृपा पात्र रहे हैं। इनके संसर्गी कवियो में कई ऐसे नाम है जो उनके साथ काशी बनारस के सहपाठीथे और कुछ 1944 के बाद काठमाण्डौँ के सहकर्मी, समकालीन रचनाकारों में "गोपीनाथ लोहनी, होमनाथ खतिवडा, राजीवलोचन जोशी, शिकरनाथ सुवेदी, काशीनाथपण्डित, मरीचिमान सिंह, कुंजविलास गौतम, रेवतीरमण गौतम, कृष्णप्रसाद उपाध्याय, शंभुप्रसाद ढुंगेल, कृष्णप्रसाद रेग्ममी, पहलमानसिँह स्वाँर, रामप्रसाद सत्याल, विष्णुचरण श्रेष्ठ, रमाशंकर जोशी, वैद्यनाथ जोशी, कुलचंद्र गौतम, भुवनप्रसाद ढुंगेल, हरिविक्रम थापा, चक्रपाणि चालिसे, लक्ष्मीदत्त पंत, केदारनाथ खतिवड़ा, चिरंजीवि शर्मा, कालिदास पराजुली, राजा जयपृथ्वीबहादुर सिंह, सोमनाथ सिग्देल आदि के नाम समाहित हैं।" नेपाली माध्यमिक काल के उपरोक्त प्रतिनिधि रचनाकारों में कुछ मोतीराम भट्ट के मित्रमंडली में सामिल थे तो कुछ उत्तरवर्ती रचनाकार हैं। उक्त अध्ययन का केंद्रविंदु समकालीन रचनाकार न होकर काशी एवं काठमाण्डौँ की मोतीमंडली मंडली में सहभागी बने रचनाकार विशेष हैं।

"बाबूराम आचार्य एवं पं. नरदेव पाण्डे द्वारा अग्रसारित मोती मंडली में विज्ञान केशरी, धीरेन्द्र केशरी तथा संसर्गी कवि में खड्गपाणि एवं रामकृष्ण वर्मा का नाम जोड़ने की वकालत करते हैं, वहीं शिव रेग्मी इस कवि मंडली में कालीप्रसाद, डोलेश्वर पाण्डेय को जोड़ने की कवायद रते हैं, वहीं 'देवराज र संसर्गी कविता' में राजीवलोचन, मरीचमान सिंह को जोड़ने की बात कही गयी है श्रीमती रमा शर्मा चेतसिंह का नाम आगे करती दिखाई पड़ती है। चूडामणि रेग्मी का आग्रह तो बाबू भारतेंदु हरिश्चंद्र को भी समेटना है।" 'नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान' द्वारा प्रकाशित 'मोतीराम भट्ट र संसर्गी कवि' नामक कृति में मोतीराम भट्ट के साथ जुड़े तथा उनकी रचनाओं से प्रभावित सभी रचनाकारों को एक मंच पर प्रस्तुत कर भावी अध्येताओं एवं शोधार्थियों के लिए सहज बना दिया है। जिसमें 29 रचनाकारों के नाम उल्लेखित हैं। जो सभी मोतीराम भट्ट के समकालीन रहे हैं, किन्तु इनमें से कुछ रचनाकार ही मोतीमंडली में सामेल भी रहे हैं।

उपरोक्त ग्रंथ के आधार पर समकालीन रचनाकारों के नाम और मोतीमंडली में सदस्य रहे रचनाकारों के नाम को पृथक-पृथक कर अवलोकन करने हेतु सर्वप्रथम एकबार सभी के नाम यहाँ उल्लेख करना अपेक्षित है। ये 29 नाम इस प्रकार हैः "कलाधर रिमाल, कालीप्रसाद (अज्याल), काशीनाथ रेग्मी (एवं घिमिरे), खड्गपाणि अर्ज्याल, गोपीनाथ लोहनी, चेतसिंह, छविलाल नेपाल, डमरूवल्लभ पोखरेल, डोलेश्वर पाण्डे, तेजबहादुर राना, तीर्थराज पाण्डे, दीर्घमान सिंह अमात्य, देवराज लामिछाने, देवशमशेर ज.व.रा., नरदेव पाण्डे, पद्मविलास पन्त, पृथ्वीवीरविक्रम शाह, भोजराज पाण्डे, मरीचिमान सिंह, मिया अञ्जद हुसेन, मोतीराम भट्ट, रङ्गनाथ कोइराला, रत्नलाल रत्न, रमानाथ आचार्य, राजीवलोचन जोशी, लक्ष्मीदत्त पन्त, लीलावर, हरिहर शर्मा लामिछाने, हेमराज पाण्डे आदि।" बालकृष्ण सम के नाटक 'मोतीराम' में काशी अध्ययन के दौरान उनके सहपाठी रहे जिन सदस्यों को पात्र बनाया है उनमें से कुछ भारतीय रचनाकार भी हैं जैसे भारतेंदु हरिश्चंद्र इनके अलावा मोतीराम भट्ट के साथ नेपाली सहयोगी थे वे इस प्रकार हैः "पद्म विलास पन्त, तेजबहादुर राना, राजीवलोचन जोशी, मरीचमान सिंह, हरिहर आचार्य, कृष्णदेव पाँडे, तीर्थराज पाण्डे, लक्ष्मीदत्त पन्त, अँजद हुसेन, गोपीनाथ लोहनी, नरदेव पाण्डे, वीरसमशेर, डम्बरसमशेर, चंद्रसमशेर, देवसमशेर, रमानाथ आचार्य आदि।" 'कविवर मोतीराम भट्टको जीवनी' नामक कृति में पण्डित नरदेव शर्मा ने कविशिरोमणि "राजीवलोचनवर्णनम्, कविवर पद्मविलास वर्णनम्, मोतीरामस्य, लक्ष्मीदत्त पन्तस्य, नरदेवस्य, भोजराजस्य, गोपीनाथस्य कहकर सात रचनाकारों का उल्लेख किया है। 'कवि मोतीराम भट्ट-बालजीवनी' नामक कृति में चूडामणि बंधु ने 'काशी को मोतीण्डली' शीर्षक तथा काठमाण्डौँ को कविमंडली' शीर्षकअंतर्गतकाशी और काठमाण्डौँ को मिलाकर कुल दस सहयात्री मोतीमंडली के सदस्य के रूप में चिन्हित किया है। काशी की कविमंडली अंतर्गत "मोतीराम भट्ट ने काशी में अपनी कविमंडली की स्थापना की थी। उस मंडली में पद्मविलास पन्त, चेतबहादुर राना, काशीनाथ, रङ्गनाथ, र चेतसिंह आदि सामिल थे तो वहीं जन्मभूमि काठमाण्डौँ वापस आने के पश्चात् दूसरी कविमंडली स्थापित हुई जिसमें नरदेव पाण्डे, लक्ष्मीदत्त पन्त, गोपीनाथ लोहनी, भोजराज पाण्डे आदि सामिल हुए।" इसके पश्चात् यह संगठन मोतीराम भट्ट के प्रतिनिधित्व में नवोदित रचनाकारों ने अपनी रचना को निखारने का सुगम स्थल बना। "वि.सं.1939-40 साल में सोह्र-सत्र वर्ष के युवक मोतीराम भट्ट ने बाबू हरिश्चंद्र की मंडली का अनुकरण पर एक लघु कविमंडली स्थापित कर काशी में साहित्यिक अभियान की शुरुआत की थी। 1944 साल में काठमाण्डौँ वापस आने के पश्चात् काठमाण्डौँ में दूसरी मंडली खडा कर पुनः पूर्ववत् गतिविधि को पुनरावृत्ति करना था।" काशी में स्थापित मोतीमंडली नें मोतीराम को सहधर्मिता का शिक्षण प्रदान किया

था और काठमाण्डौँ में स्थापित मोतीमंडली ने राष्ट्रीयधर्मिता की अलख जगाई। इसी मार्ग पर युवा रचनात्मक योद्धा मोतीराम भट्ट के संपर्क से होकर गुजरते रहे। उनकी रचनाओं में सहधर्मिता, प्रशिक्षणात्मक धर्मिता, राष्ट्रीयता एवं यौवन की असीमित आकांक्षाओं का अवलोकन किया जा सकता है। काशी एवं काठमाण्डौँ की मोतीण्डली के रचनाधर्मिता का गुण भले ही अलग-अलग हो, किन्तु इसे नकारा नहीं जा सकता कि नेपाली साहित्य की श्रीवृद्धि में मोतीराम द्वारा स्थापित कविमंडली का वृहत योगदान रहा है। अतः विभिन्न ग्रंथों द्वारा उपलब्ध प्रामाणिकता के आधार पर मोतीमंडली में सामिल प्रमुख रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

पं. राजीवलोचन जोशी

1905-1986: मोतीराम भट्ट के अग्रज कवियों में पं. राजीवलोचन जोशी को उनके आन्दोलन में सहभागी होने का प्रमाण पलब्ध होता है। "कवि राजीव लोचन जोशी नेपाली साहित्य के भानुभक्तीय आदर्शलोक से मोतीराम के यथार्थलोक बीच के संक्रमण काल, सन्धी काल में उत्पन्न कवि के रूप में जाने जाते हैं।" एक अनुभवी रचनाकार राजीवलोचन के चरित्र से भी मोतीराम प्रभवित हुए बिना नहीं रहे। "दोनों कवि एक-दूसरे से प्रभवित दिखे जाते हैं। मोतीराम ने राजीवलोचन का अभिभावकत्व ग्रहण किया तो राजीवलोचन ने मोतीराम से नई चेतना ग्रहण किया ऐसी रोचक दृश्य कई जगह पर दिखने को मिलता है।" समालोचना 'पं राजीवलोचन जोशी र केदारकल्प' में राजीवलोचन की रचना केदार कल्प को नेपाली श्रृंगारकाल का मार्गनिर्देशक ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत किया है। पं.मोतीराम भट्ट ने उधृत शलोक में केदारकल्प को श्रेष्ठ कविता अतिरत्न ग्रंथ कहकर इस ग्रंथ की प्रशंसा की है। अब तक के अनुसंधान के अनुसार इस काल के प्रथम कवि राजीवलोचन जोशी (सन् 1848-1920 ई.) हैं। इनकी रचनाएँ कालिकाष्टक-1886, कुटुम्बशत्रु-1899, छेड़छाड़-1899, घोचपेच- 1890, जाँतो-ढिकी-1896, यौवन का कुरा-1899, हाउ देखाउ-1896, किम प्रिये-1866, आदि कविताएँ श्लोक-संग्रह, सूक्तिसिन्धु,माधवी, गफाष्टक आदि में संकलित हैं।" पं. राजीवलोचन जोशी (1848-1920) नेपाली साहित्य में भानुभक्तीय आदर्शलोक और मोतीराम भट्ट के यथार्थलोक के बीच के संक्रमण काल के प्रमुख कवि माने जाते हैं। उनकी रचनाएँ, जैसे केदारकल्प, नेपाली श्रृंगारकाल का मार्गदर्शक ग्रंथ माना जाता है, जिसे मोतीराम भट्ट ने 'अतिरत्न ग्रंथ' कहकर प्रशंसा की। दोनों कवियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया था। मोतीराम ने राजीवलोचन का अभिभावकत्व स्वीकार किया, जबकि राजीवलोचन ने मोतीराम से नई साहित्यिक चेतना ग्रहण की। कालिकाष्टक, कुटुम्बशत्रु, और घोचपेच जैसी कृतियों से उन्होंने नेपाली साहित्य को समृद्ध किया, जो संक्रमणकालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

नरदेव-पाण्डे:

(1928-2001): "नरदेव पाण्डे का जन्म मोतीराम भट्ट से ठीक छःसाल बाद 1929 कार्तिक कृष्ण अमावस्या (लक्ष्मी पूजा) के दिन हुआ था। कहा जाता है गोरखापत्र के प्रथम सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक नरदेव पाण्डे के साथ मोतीराम भट्ट के अप्रकाशित पांडुलिपियों का सङ्कलन था।" जिन्होंने 'कविवर मोतीराम भट्टको जीवनी' लिख कर माध्यमिककालीन नपाली साहित्येतिहास में मोतीराम भट्ट के योगदान को समाज के बहुसंख्यकों के साथ साझा किया। समाज में अल्प परिचित भानुभक्त आचार्य को आदिकवि की उपाधि से विभूषित कर उनकी कृतियों को संपादन-प्रकाशन करनेवाले मोतीराम भट्ट को इस

जीवनी ने नजदीक से परिचय करने में सहायता प्रदान की। "नरदेव पाण्डे ने वि.सं. 1958 में 'अद्भूत मिलाप' तथा वि.सं 1959 में 'मेरिना चरित्र' छपवाया। पशुपति छापाखाना का सम्पूर्ण व्यवस्थापन के जिम्मेदारी उन्हीं के कन्धों पर था, अतः विलम्ब से कविवर 'मोतीराम भट्टको जिवनचरित्र' वि.सं 1995 में मात्र छपवाया।" उनकी दो पद्य कृतियाँ शङ्खमूल यात्रा-1956, चनद्रभक्ति प्रकाश-1963 चंद्रशंशेरकालीन नेपाल में प्रकाशित हुए। इसी प्रकार गद्य कृतियाँ तीन हैं वीरका चातुरी, अद्भूत विलास र मेरिना चरित्र। नरदेव समस्यापूर्ति, कूट श्लोक, ग़ज़ल आदि रचनाओं से तो वे परिचित है ही उनके अन्य श्लोक कविता सङ्गीत चन्द्रोदय, भाषा गद्य सङ्ग्रह, तथा श्यामजीप्रसाद अर्ज्याल के कवितासङ्ग्रह में पढ़ सकते हैं। सुधारागर का सम्पादन तथा गोरखापत्र 1958 का सम्पादकत्य का दायित्व भी इन्हीं के कन्धों पर था।

गोपीनाथ लोहनी:

1903-1974: "मोतीमंडली के सक्रिय सदस्य तथा सुपरिचित नाम गोपीनाथ लोहनी का जन्म काठमाण्डौँ के सुप्रसिद्ध लोहनी परिवार में वि. सं. 1903 को और मृत्यु वि. सं. 1974 में हुआ। माध्यमिक काल पद्य एवं गद्य में लगभग दर्जन ग्रंथों की रचना कर इन्होंने नेपाली साहित्य को समृद्ध करने का कार्य किया है। उनके प्रसिद्ध ग्रंथों में ध्रुव चरित्र कथा- 1946, सत्य दुर्गा भाषा- 1947, नृग चरित्र भाषा-1949, तथा नलदमयन्ती कथा- 1956, सत्य हरिश्चंद्र कथा-1971, भाषा श्लोक- 1948, गफाष्टक-1963, आदि। सूक्तिसिन्धु नामक संग्रहित कृति में इनकी समस्यपूर्ति प्राप्त होती हैं। ये अपने ग़ज़ल के अन्त्य में 'नाथ' उपनाम का प्रयोग करते थे।" गणेशबहादुर प्रसाई लिखते हैं "संगीत चन्द्रोदय के अनुसार सबसे अधिक ग़ज़ल लिखने वाले कवि गोपीनाथ लोहनी हैं।" मोतीराम से उमर में वीस साल बढ़े लोहनी ने जितना लिख सके मोतीराम भट्ट के समकालीन कवियों में बहुत शीघ्र लेखन के प्रतिभा वाले व्यक्तित्व में उनका भी नाम आता है। गोपीनाथ लोहनी (1903-1974) नेपाली साहित्य में मोतीमंडली के प्रमुख और सक्रिय सदस्य थे। उन्होंने गद्य और पद्य दोनों में रचनाएँ करके साहित्य को समृद्ध किया। उनके प्रसिद्ध ग्रंथों में ध्रुव चरित्र कथा, सत्य दुर्गा भाषा, नृग चरित्र भाषा, और नलदमयन्ती कथा जैसे कृतियाँ शामिल हैं। लोहनी ग़ज़ल लेखन में निपुण थे और अपनी गजलों में 'नाथ' उपनाम का प्रयोग करते थे। संगीत चन्द्रोदय के अनुसार, वे माध्यमिककाल में सबसे अधिक ग़ज़ल लिखने वाले कवि माने जाते हैं। मोतीराम भट्ट से 20 वर्ष वरिष्ठ होने के बावजूद लोहनी ने अपने लेखन में समान ऊर्जा और नवीनता दिखाई। उनकी समस्यापूर्ति और भावपूर्ण गजलें साहित्यिक कौशल का परिचायक हैं। उनकी कृतियाँ, विशेष रूप से ग़ज़ल और कथात्मक कविताएँ, नेपाली साहित्य में स्थायी योगदान के रूप में जानी जाती हैं।

तेजबहादुर राना:

मोतीराम भट्ट के बनारस के सहपाठी एवं अभिन्न मित्र हैं। ये मोतीराम भट्ट के अभन्न मित्र ही नहीं अपितु सहकर्मी तथा सहयोगी भी माने जाते हैं। "1941 साल में गो-सेवक जगतनारायण को संयुक्त रूपमें लिखित गद्यात्मक पत्र से इन दो मित्रों के एक साथ कार्य करने की बात सामने आती है।" कहा जाता है तेजबहादुर राना आर्थिक रूप से बहुत सम्पन्न थे। उन्होंने मोतीराम भट्ट को पुस्तक प्रकाशन के लिए बहुत सहयोग भी किया था। "भानुभक्तका रामायण, (बालकाण्ड) प्रश्नोत्तरमाला, भक्तमाल एवं गोरक्षा आदिके प्रकाशक यही थे।" अतः मोतिराम भट्ट और तेजबहादुर राना सहपाठी ही नहीं अपितु मोतीराम

भट्ट के रचनात्मक कार्य के अभन्न सहयोगी भी रहे। तेजबहादुर राना, मोतीराम भट्ट के बनारस के सहपाठी, अभिन्न मित्र और सहयोगी थे। आर्थिक रूप से सम्पन्न राना ने मोतीराम भट्ट के साहित्यिक कार्यों को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। "भानुभक्तका रामायण (बालकाण्ड), प्रश्नोत्तरमाला, भक्तमाल और गोरक्षा" जैसे प्रकाशनों में उनका सहयोग प्रमुख रहा। 1941 के गद्यात्मक पत्र से स्पष्ट होता है कि दोनों मित्र साहित्यिक और सामाजिक कार्यों में एक साथ सक्रिय थे। तेजबहादुर राना ने न केवल मित्रता निभाई बल्कि साहित्यिक योगदान में अपनी सहभागिता से मोतीराम भट्ट के रचनात्मक प्रयासों को नई ऊंचाइयों तक पहूँचाया।

तीर्थराज पाण्डे:

1929-1979:"तीर्थराज पाण्डे का जन्म भानुदत्त के पौत्र एवं ब्रह्मविलास के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में 1929 साल में हुआ था। इनके परिवार में विद्वानों की कमी नहीं थी अतः आनुवंशिक प्रभाव इनमें स्वतः विद्यमान था। उन्होंने 1947 साल में मोतीराम भट्ट को स्वरचित 'माधवानल कामकन्दला' वाचन करके सुनाया था। "भरतराज पन्त लिखित कवि तीर्थराज पाण्डे तथा उनकी 'उपदेश मञ्जरी' (गोरखापत्र,14 असोज, 2024) 'पुराना कुरा' (नेपाल वर्ष 22, अङ्क 3, 2048) एवं टुकराज मिश्र द्वारा लिखित 'मोतीरामका समकालीन कवि तीर्थराज' (गोरखापत्र, मंसीर 3, 2051 ने तीर्थराज को परिचित कराने हेतु किंचित त्रिण प्रयास किया गया है।"

पद्मविलास पन्त

1919-1988: कवि मोतीराम भट्ट से उमर में चार साल जेष्ठ पद्मविलास पन्त मोतीराम के सहृदयी मित्र थे। मोतीराम भट्ट के साथ इनकी मुलाकात काशी में ही हुई थी। लमजुङ इनका पैत्रिक स्थान है। लगभग छः साल तक काशी में अध्ययन किया। पद्मविलास पन्त काशी से 1944 साल में घर वापस लौटे और मोतीराम भी इसी साल अपनी जन्मभूमि वापस आए। पद्मविलास पन्त (1919-1988), मोतीराम भट्ट के सहृदयी मित्र और श्रृंगारी काव्य के कवि थे। उनकी मुलाकात मोतीराम से काशी में हुई, जहाँ वे लगभग छह साल रहे। 1944 में, पन्त अपने घर लौटे, और मोतीराम भी इसी वर्ष अपनी जन्मभूमि वापस आए। पन्त को श्रृंगार काव्य में विशेष रुचि थी और उन्होंने अनेक कविताएँ रचीं। 'सूक्तिसिन्धु' में उनके दो श्लोक उपलब्ध हैं, जो उनकी काव्यशक्ति को दर्शाते हैं। गणेशबहादुर प्रसाई ने 'माध्यमिककालिक काव्यसाहित्य' में उनका उल्लेख किया है, जहाँ उनकी रचनाओं को सम्मानित किया गया है।

पृथ्वीवीर विक्रम शाह

1932-1968: श्री५ सुरेन्द्र के पौत्र तथा युवराजाधिराज त्रैलोक्य के पुत्र महाराजाधिराज श्री५ पृथ्वीवीरविक्रम शाह का मोतीमंडली में होना अपने आपमें मोतीमंडली की ऐतिहासिकता को दर्शाता है। "अत्यंत सुन्दर स्वरूप के 'मोतीमंडली'की साहित्यिक क्रियाकलाप से प्रभावित थे। यद्यपि मोतीराम के साथ इनका प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। परंतु राजदरबार में प्रवेस प्राप्त लक्ष्मीदत्त श्री५ के सहपाठी माने जाते हैं। नरदेव तथा कृष्णदेव पाण्डे मार्फत इन्होंने मोतीराम भट्ट के साहित्यिक विशेषता को जाना होगा" कहा जाता है कि "तत्कालीन राजनीतिक वातावरण में श्री५ के लिए खुलकर कविता लिखना संभव नहीं था, किन्तु

प्रतिभा एवं कला को रोकना असंभव है। अतः छुपकर भी उन्होंने अपनी रचना मोती मंडली समक्ष भेज दिया जिसे मोती मंडली के सदस्यों ने परिस्थिति को भाँपते हुए 'श्लोकसंग्रह' में रचनाकार के स्थान पर 'कस्यापि' लिखकर प्रकाशित किया।" बालकृष्ण सम ने 'श्लोक संग्रह' के पृष्ठ संख्या 43 का हवाला देते हुए उल्लेखित श्लोक को पृथ्वीवीरविकम के होने का संकेत दिया है।

मियाँ अञ्जद हुस्सैन

ग़ज़लकार मियाँ अञ्जद हुस्सैन 'अंजद' उपनाम से भी परिचित हैं। ग़ज़ल में इन्होंने अपने आपको 'मिञा' कहकर भी संबोधित किया है। "गोपीनाथ (1930-1974) के समकालीन ग़ज़लकार मियाँ अंजद हुस्सैन ने मोतीराम भट्ट तथा लक्ष्मीदत्त पन्त के संगत में रहकर नेपाली में ग़ज़ल लिखना प्रारंभ किया।" मियाँ अञ्जद हुस्सैन, ग़ज़लकार 'अंजद' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं, जिन्होंने ग़ज़ल के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। वे गोपीनाथ के समकालीन थे और मोतीराम भट्ट तथा लक्ष्मीदत्त पन्त के साथ मिलकर नेपाली ग़ज़ल की रचना करने लगे। उनकी गजलें भावनाओं और जीवन के विभिन्न पहलुओं को सजीव रूप में प्रस्तुत करती थीं, जैसे कि उनकी पंक्तियाँ 'चिट्ठी पैह्ले न दी भन्नु सँधैको हाल यो मेरो' ने उनकी ग़ज़ल कला को दर्शाया। मियाँ अञ्जद हुस्सैन का नाम मोतीमंडली में आदर से लिया जाता है, हालांकि उनके जीवन और काव्य के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है।

लक्ष्मीदत्त पन्त

1922-1962: लक्ष्मीदत्त पन्त मोतीमाला के एक होनहार मोती हैं। मोतीराम भट्ट द्वारा स्थापित मोतीमंडली के बहतरीन ग़ज़लकार के रूप में ये परिचित हैं। "विद्वत परिवार में महाकवि सुकृतिदत्त के भाई ज्योतिषविद ज्वाला दत्त के पौत्र एवं अग्निदत्त के कनिष्ट पुत्र के रूप में लक्ष्मीदत्त पन्त का जन्म हुआ था। इनके पिता श्री5 पृथ्वीवीर विक्रम के भी अध्यापक थे। वे संस्कृत के अलावा उर्दू, हिंदी, बङ्गला, नेवारी, एवं अंग्रेजी के भी विज्ञ थे।" पड़ोसी मोतीराम भट्ट से उनका पुराना संपर्क था। श्री५ पृथ्वीवीरविक्रम द्वारा लिखित कविता काण्ड में संलग्न रहने के कारण उनकी नौकरी चली गई। पहूँचे हुए कई लोगों से संपर्क साधने के पश्चात् उनकी नौकरी वापस तो मिली, किन्तु नौकरी पुनः हाथ लगने के कुछ ही साल बाद उनका देहांत हो गया। उनकी कृतियाँ भ्रमर चंपक संवाद, दक्षिणकालिका स्तुति, मोतीराम र वैराग्य दर्पण प्रमुख माने जाते हैं। "मोतीराम के अंतरंग मित्र पं लक्ष्मीदत्त पंत ने मोतीराम भट्ट को 'कविकुलमुकुटमणि' की उपाधि प्रदान किया है- मोतीराम भनी कवि सुह्रद हुन् यो मित्रको मंडली। शोभा पाइरहन्छ चंद्र जसरी राखेर तारावली।"

भोजराज पाण्डे

प्रतिभाशाली कवि भारत जीवन पत्रिका में समस्यापूर्ति किया करते थे। ये भी मोतीमंडली के सदस्य थे। तिन्तु इन्होंने कम लिखा क्योंकि वे राजकीय नौकरी में संलग्न थे। कान्तिपुर जेठ 30 ने उनके विषय में उनकी कुछ सामाग्री का प्रकाशन किया है। उपरोक्त रचनाकारों ने मोतीराम भट्ट के साथ प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में लगभग डेड़ दशक कार्य किया अथावा उनका उनुगमन किया। उनके साथ संपर्क में रहे। इनके अलावा भी कई रचनाकार कुछकाल के लिए संपर्क में रहे कुछ का संपर्क

मित्रमंडली के बीच रहा तो कुछ उन्हें अपने काव्यपथ के पुरू के रूप में रहा। तत्कालीन शाषकों से निर्भिक होकर रचना करने का उनका मुख्य कारण था कुछ शाषक नके समकक्षी भी रहे थे। कुछ तो लिखते भी थे। मोतीरामको आदर्श व्यक्ति मानते थे अतः नका सम्मान दरबार में मे भी बराबर के भीतर भी विशिष्ट था ऐसा कहना अत्युक्ति न होगा।

खड्गपाणि अर्ज्याल

खड्गपाणि मोतीराम भट्ट के सबसे करीबी और उनके जीवन के संकट काल में आर्थिक सहयोग करने वाले हितैषी के रूप में पहचाने जाते हैं। मोतीराम भट्ट ने 1944 में प्रकाशित अपनी रचना गजेन्द्र मोक्ष भाषा के अन्त्य में उनकी प्रशंसा की है। खड्गपाणि संस्कृत के भी जानकार थे। इसका प्रमाण शिवराज आचार्य द्वारा लिखित नेपाल संस्कृत ग्रंथ कार परिचय (2048) इस बात की पुष्टि करता है। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि मोतीमंडली में आर्थिक कमी को दूर करने की क्षमता उनमें अवश्य ही रही होगी। मोतीराम भट्ट ने अपने अनन्य मित्र खड्गपाणी का जिक्र अपनी रचना गजेन्द्रमोक्ष के अन्त्य में प्रशंसास्वरूप किया है- कुछ विद्वानों का आकलन यह भी है कि गजेन्द्र मोक्ष भाषा छपवाने में उनका आर्थिक सहयोग भी रहा है। महत्वपूर्ण रूप से उनकी फूटकर रचनाएँ नलदमयन्तीको कथा, भाषा पद्य संग्रह, सत्यदुर्गा भाषा, सूक्तिसिन्धु, गफाष्टक, संगीत चन्द्रोदय, श्लोक संग्रह, नृग चरित्र आदि में प्राप्त होते हैं। समग्रता में कहा जाय तो मग्रता मोतीराम भट्ट नेपाली साहित्य के एक प्रमुख स्तंभ हैं, जिनका योगदान न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि उन्होंने सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ में भी एक गहरी छाप छोड़ी है। उनके समय का नेपाली साहित्य भारतीय और नेपाली सामाजिक, ऐतिहासिक, और सांस्कृतिक परिवेश से गहराई से जुड़ा हुआ था।

निष्कर्षः

भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं मोतीराम भट्ट अपने काल के प्रतिनिधि रचनाकार रहे हैं। इन्होंने अपना सारा जीवन भाषा साहित्य के लिए समर्पित किया था। साथ ही समकालीन नवीन रचनाकारों को भी एक मंच पर रखते हुए संगठन का विकास किया जिसे भारतेंदु मंडल एवं नेपाली में मोतीमंडली के नीम से प्रतिस्थापित किया। इस संगठन ने आगे परंपरागत साहित्य के विकास के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया और आधुनिक साहित्य का मार्ग प्रसस्त किया। समग्रता में भारतेंदुमण्डल एवं मोतीमण्डली युवा रतनाकारों के लिए बहुत बड़ा प्लेटफार्म था। दोनों रचनाकार चालीस साल से कम आयु के रहे हैं। परंतु उनकी भूमिका सतायु से भी अधिक की थी। मोतीराम भट्ट भारतेंदु से अत्याधिक प्रभावित थे। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप उन्होंने नेपाली भाषा साहित्य के विकास के लिए संगठन को प्राथमिकता प्रदान किया जिसे मोतीममडली के नामं से जाना जाता है। अतः रचनाकारद्वय के योगदान के साथ-साथ समकालीन सभी रचनाकारकों को एक साथ एक मञ्च पर परिचय प्राप्त करने का एक नवीन साधन के रूप में भी इसे देखा जा सकता है।